इकाई 8 विश्व युद्धों के बीच (1914-1950) पर्यटन का उत्कर्ष (boom)

संरचना

8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 बीसवीं शताब्दी की अवधि

8.3 पर्यटन और अर्थव्यवस्था यानी संकट

8.4 परिवहन और तकनीकी प्रगतियाँ

8.5 राजनीति और पर्यटन

8.6 राष्ट्र संघ (लीग ऑफ नेशंस)

8.7 आईयूओटीओ (IUOTO)

8.8 बरमूडा समझौता

8.9 सारांश

8.10 शब्दावली

8.11 अपनी प्रगति को जाँचिए/अभ्यास के लिए संकेत

.....

8.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप इस योग्य हो जाएँगे कि आप,

- पर्यटन के उत्कर्ष को जान सकें;
- राष्ट्र संघ के गठन और इसकी भूमिका को समझ सकें;
- परिवहन और तकनीकी प्रगतियों पर चर्चा कर सकें; और
- बरमूडा समझौते और आईयूओटीओ (IUOTO) के बारे में जान सकें।

8.1 प्रस्तावना

आरम्भिक दिनों के सूत्रपात से ही मनुष्यों ने विभिन्न कारणों से यात्राएँ की हैं। संसाधनों का अर्जन (व्यापार), जल, खाद्य और सुरक्षा पर्यटन की प्रारम्भिक प्रेरणाएँ थीं। लेकिन जब लोगों के मन में सन्तुष्टि और आनन्द के लिए यात्राएँ करने का विचार आया, तो पर्यटन के कारणों में परिवर्तन आ गया। यात्रा के रूप या तरीके के हिसाब से पर्यटन सदैव तकनीक पर निर्भर रहा है। पहिये और नौकाओं जैसी तकनीक के आविष्कार ने परिवहन के लिए सुगम साधन उपलब्ध कराए। प्रत्येक तकनीकी उन्नति ने यात्रा करने के लिए व्यक्तियों के अवसरों को बढ़ाया। जब सरकारों द्वारा आधारभूत संरचनाओं का विकास किया गया और अन्य सुविधाएँ एकत्रित हुईं, तो आत्मिक उन्नति, भूदृश्यों को देखने की ललक और आध्यात्मिक उद्देश्यों के कारण यात्राओं के महत्व में वृद्धि हुई। इस इकाई में आप राजनीति और संगठनों के साथ-साथ पर्यटन के विकास का महत्व समझेंगे।

8.2 बीसवीं शताब्दी की अवधि

द्वित्तीय विश्व युद्ध के पश्चात अन्तरराष्ट्रीय पर्यटन के विकास के लिए उत्तरदायी सर्वाधिक विश्वव्यापी कारकों को तीन अग्रगण्य शीर्षकों में रखकर चर्चा की जा सकती है : तकनीक में क्रान्तिकारी परिवर्तन, उत्पाद का प्रसार तथा सामाजिक या मौद्रिक कारक।

पुरातन काल से ही यात्रा मनुष्य की अनिवार्य गतिविधियों में शामिल रही है। इस यात्रा के अनेक कारण रहे हैं, जैसे- भोजन, जल, सुरक्षा या संसाधनों के अर्जन (व्यापार) आदि। (के लिए यात्राएँ की गयी) प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में तीन शब्द थे - तीर्थाटन, देशाटन और पर्यटन। ये सभी संस्कृत भाषा के शब्द हैं जिनका तात्पर्य ऐसी यात्राओं से हैं जिनका उद्देश्य क्रमशः धार्मिक कारण, व्यापार और वाणिज्य तथा फुरसत और आनन्द होता है।

यह प्रेक्षित करना रोचक है कि जब लोगों के पास आनन्द और अन्वेषण के लिए यात्रा करने का विचार आया तो यात्राओं के कारणों और बुनियादी उद्देश्यों में बहुत अधिक बदलाव आ गया। हम यह भी देखते हैं कि यात्रा, परिवहन के साधन और माध्यम के रूप में, तकनीक पर निस्सन्देह निर्भर करती है। प्रारम्भिक दिनों में, यात्री दूर-दूर तक पैदल यात्रा करके या पालतू जानवरों की सवारी करते हुए जाया करते थे। अगर हम आगे चलकर देखें, तो पहिये और नौवहन जैसी तकनीक के आविष्कार ने परिवहन के नए माध्यमों को उपलब्ध कराया। तकनीक के क्षेत्र में प्रगति के प्रत्येक पहलू ने यात्रा करने के लिए व्यक्तियों के अवसरों को खूब बढ़ाया। यात्रा में रुचि को बढ़ाने वाले अन्य अनेक कारक हैं : शैक्षिक उद्देश्य, प्राकृतिक दृश्यों का आनन्द लेना, धार्मिक कारण और तीर्थयात्रा के लिए किया जाने वाला भ्रमण आदि। ज्यों-ज्यों आधारभूत संरचना विकसित होती गई और सरकारों की मदद से अन्य सेवाओं का विस्तार प्रारम्भ हुआ, त्यों-त्यों यात्रा में रुचि बढ़ती चली गयी।

उस समय भारत ब्रिटिश शासन के अधीन था, इसलिए फुर्सत और आनन्द के लिए यात्रा करने के बारे में लोग अधिक सोच भी नहीं सकते थे। इसी कारण भारत में उस अवधि के

दौरान पर्यटन के व्यवसाय में किसी प्रकार की वृद्धि नहीं हुई जबकि पश्चिमी देशों, विशेषकर संयुक्त राज्य अमेरिका, के पास धन का ऐसा अधिशेष था जिसकी आवश्यकता फुर्सत और आनन्द के उद्देश्यों से सम्बन्धित यात्राओं के लिए होती ही है। यह वही समय था जब अमरीकी सरकार ने एक बार फिर देश में पर्यटन उद्योग को प्रोत्साहित करने पर जोर देना प्रारम्भ किया और सन् 1898 में इस विषय को लेकर वहाँ कानून भी बनाया गया। सरकार ने ऐसे कानून बनाए जो विशेषतौर पर पर्यटन उद्योग को प्रेरित करने के लिए अभिकल्पित किए गए थे और इस सन्दर्भ में सन् 1900 में हेनरी फ्लैगलर ने फोर्ट नसाऊ में होटल कॉलोनियल खोला। यह देश का ऐसा पहला होटल था जो समुद्र के किनारे अवस्थित था और यह वर्तमान ब्रिटिश कॉलोनियल होटल की जगह पर स्थित था। फ्लैगलर को यह श्रेय भी जाता है कि उन्होंने फ्लोरिडा और नसाऊ के बीच पर्यटकों के आने-जाने के लिए अपनी स्वयं की जलपोत-व्यवस्था संचालित की, जिसमें जलपोत भाप से चला करते थे।

सन् 1914 में एक पर्यटन विकास बोर्ड की स्थापना की गयी जिसके पास बहामा द्वीपों का विज्ञापन और विपणन करने की शक्तियाँ थीं। इस बोर्ड का वार्षिक बजट तीन हजार पौण्ड का था। नसाऊ जाने के लिए प्रथम विमान सेवा सन् 1919 में शुरू की गयी। जलविमान के सम्बन्ध में चाक (Chalk) के नाम से फ्लोरिडा और बहामा के बीच एक हवाई सेवा भी प्रारम्भ की गयी। सन् 1924 में बिमिनी रॉड और गन क्लब की शुरूआत के साथ ही आउट द्वीप में पर्यटन के विकास में सचमुच एक नए दौर का आरम्भ हुआ। इस भौगोलिक क्षेत्र में यात्रियों की बढ़ती संख्या के परिणामस्वरूप पैन अमेरिकन ने भी सन् 1929 में फ्लोरिडा और नसाऊ के बीच अपनी दैनिक विमान सेवा प्रारम्भ की।

1920-30 के दशक में, सन् 1923 में ब्रिटिश कॉलोनियल होटल के पुनर्निर्माण और सन् 1926 में होटल फोर्ट मांटेग्यू के निर्माण के साथ, पर्यटन उद्योग ने बहुत शानदार वृद्धि के

दिन देखे। पर्यटन में जो वृद्धि सन् 1920 में देखी गयी थी, बाद में वह 1930 की आर्थिक महामन्दी के कारण रुक गयी और अन्य आर्थिक गतिविधियों के साथ-साथ बहामा का पर्यटन उद्योग भी गतिहीन हो गया।

सन् 1850 से 1930 के बीच बहामा की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था पर्यटन पर ही आधारित थी और इसने पर्यटन से जुड़ी गतिविधियों के सम्बन्ध में तीव्र विस्फोट को प्रदर्शित किया था और ऐसा आर्थिक गतिहीनता की लम्बी-लम्बी अवधियों के जरिये घटित हुआ था। सन् 1860 के पहले, नसाऊ उस अवरोध का मुख्य केन्द्र हुआ करता था, जो गृहयुद्ध के कारण संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिणी राज्यों में घटित हुआ था। गृहयुद्ध के इन वर्षों में बहामा में, इस भीड़भाड़ के परिणामस्वरूप राजस्व की खूब बढ़ोत्तरी हुई।

किन्तु सन् 1865 में गृहयुद्ध समाप्त हो जाने के कारण इस बढ़ोत्तरी में अचानक रुकावट आ गयी। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक आते-आते बहामा द्वीपों ने अनानास की खेती के जरिये समृद्धि हासिल की लेकिन यह सफलता अधिक दिनों तक नहीं टिक सकी क्योंकि बेहतर गुणवत्ता और कम लागत के कारण यह खेती स्थानान्तरित होकर हवाई द्वीप में चली गयी।

1920 के दशक को संयुक्त राज्य अमेरिका में मदिरा के विनिर्माण और बिक्री के सम्बन्ध में निषेध का दौर घोषित किया गया। तब नसाऊ, जो कि रम (rum) के मामले में एक प्रमुख केन्द्र था, ने इस व्यवसाय से काफी राजस्व अर्जित किया। इन द्वीपों के अनेक समृद्ध परिवार अपनी सम्पदा के स्रोत को अतीत में जाकर इस अवधि से जोड़ सकते हैं। लेकिन जब सन् 1933 में इस निषेध को समाप्त कर दिया गया तो यह आर्थिक गतिविधि समाप्त हो गयी।

1930 के दशक में बहामाई प्राकृतिक स्पंज उद्योग के पतन के कारण बहामा द्वीपों की आर्थिक कठिनाइयाँ बहुत बढ़ गयीं क्योंकि व्याधियों के कारण स्पंज नष्ट हो रहा था। यह "लाल ज्वार (red tide)" की तरह ही था। कृत्रिम स्पंज के आने से पहले, समुद्र के भीतर उथले जल में उगने वाले स्पंज का व्यक्तिगत रूप से धुलाई और अन्य कामों में व्यापक रूप से उपयोग होता था और बहुत सारे बहामाई लोगों के लिए यह स्पंज आय का एक लाभप्रद स्रोत हुआ करता था।

बहामा द्वीपों में पर्यटन उद्योग के सन्दर्भ में एक वर्ष घोषित करने को लेकर सरकार ने अपनी प्रतिबद्धता दर्शायी।1930 की अवधि बहामा द्वीपों में व्यवहार्य पर्यटन उद्योग के सन्दर्भ में बहुत सम्भावनायुक्त सिद्ध हुई। सन् 1938 के दौरान बहामा द्वीपों में कुल 57,394 पर्यटक आए, जिसमें से 10,000 पर्यटक रुके। सन् 1941 में पैन एएम ने फ्लोरिडा और नसाऊ के बीच अपनी पहली, बिना रुकने वाली, गैर-जलविमान सेवा शुरू की। जहाँ तक सन् 1940 की अवधि का प्रश्न है, यह द्वित्तीय विश्व युद्ध के समापन का दौर था और सरकार ने अतीत में जाकर अपने आर्थिक इतिहास को देखा। इस इतिहास में छोटी-छोटी कालावधियों वाली तेजी थी और इसके बाद आने वाली निराशाजनक मन्दियाँ थीं। देश में एक स्थिर अर्थव्यवस्था का सृजन करने के लिए सरकार ने आर्थिक गतिविधियों के दो प्राथमिक क्षेत्रों को विकसित करने का निर्णय लिया। पहला था, पर्यटन उद्योग के सन्दर्भ में एक वर्ष घोषित करना और दूसरा अपतटीय वित्तीय सेवाओं के क्षेत्रक से सम्बन्धित था। परिणामस्वरूप सन् 1949 के दौरान बहामा द्वीपों में, पिछले वर्ष की पर्यटकों की भीड़ की तुलना में, केवल 32,000 पर्यटक ही आए। यह याद रखा जाना चाहिए कि उस समय पर्यटन तीन से चार महीने के छोटे-से मौसम तक सीमित हुआ करता था और बहामाई

सरकार ने अमेरिका और यूरोप के समृद्ध पर्यटकों से अपील की कि वे इस मौसम से इतर समय में भी बहामा घूमने आएँ और बहामा द्वीपों के इलाकों का अन्वेषण करें।

होटलों के निर्माण को प्रेरित करने के लिए सरकार ने सन् 1949 में होटल प्रोत्साहन अधिनियम (सन् 1954 में भलीभाँति संशोधित) पारित किया। इस अधिनियम में सीमा-शुल्क को वापस पेश करने का प्रावधान था तथा इससे मिलती-जुलती कुछ अन्य रियायतें भी थीं।

1950 के दौरान, द्वीप की सरकार के एक प्रमुख सदस्य सर स्टैफोर्ड सैण्ड्स ने पर्यटन विकास बोर्ड को पुनर्जीवित किया और पाँच लाख पौण्ड के बजट का अनुमोदन किया। इस बजट का उपयोग व्यापक विज्ञापनों के लिए तथा उत्तरी अमेरिका और यूरोप में पाँच समुद्रपारीय कार्यालयों को खोलने के लिए किया जाना था।

8.3 पर्यटन और अर्थव्यवस्था यानी संकट

सन् 1920-21 की मन्दी को संयुक्त राज्य अमेरिका के इतिहास में तीक्ष्ण अपस्फीतिकारक मन्दी माना जाता है। इस मन्दी ने अन्य देशों को भी प्रभावित किया और यह मन्दी प्रथम विश्व युद्ध समाप्त होने के चौदह महीने पश्चात शुरू हुई थी। यह मन्दी जनवरी 1920 में शुरू हुई थी और जुलाई 1921 तक बनी रही। प्रथम विश्व युद्ध समाप्त होने के बाद एक तीक्ष्ण मन्दी आयी जो दो सालों तक बनी रही। इसने बहुत जटिलताएँ पैदा कर दीं क्योंकि लाखों दिग्गजों को अर्थव्यवस्था ने निगल लिया था। अर्थव्यवस्था ने धीमे-धीमे पटरी पर आना शुरू किया लेकिन फिर भी युद्धकालीन अर्थव्यवस्था से शान्तिकालीन अर्थव्यवस्था तक स्थानान्तरित होने के लिए अर्थव्यवस्था को एक लम्बी दूरी तय करनी थी। मन्दी के लिए

बहुत सारे कारकों को उत्तरदायी ठहराया गया, जैसे वापस आने वाली फौजें, जिन्हें नागरिकों के श्रमबल के मुकाबले उमड़ने के एक विकल्प के तौर पर देखा गया और यह माना गया कि अर्थव्यवस्था द्वारा अवशोषित किए जा रहे दिग्गजों को वे बचा लेंगी। मजदूर संघों के संघर्षों में असफलता, वित्तीय और मौद्रिक नीति में परिवर्तन तथा मूल्य-अवसरों में परिवर्तन जैसे अन्य कारक भी अर्थव्यवस्था की हालत बिगाड़ने के लिए उत्तरदायी माने जाते हैं।

बेरोजगारी वह प्रमुख मुद्दा थी जिसका अनुभव मन्दी के दौरान किया गया। रोमर के अनुसार, बेरोजगारी की वृद्धि दर 5.2 प्रतिशत से बढ़कर 8.7 प्रतिशत हो चुकी थी। इसके अतिरिक्त, स्टैनले लेबेरगॉट द्वारा भी बेरोजगारी का एक आकलन किया गया है। लेबेरगॉट के मुताबिक, बेरोजगारी 5.2 प्रतिशत से बढ़कर 11.7 प्रतिशत पहुँच चुकी थी। यह स्पष्ट है कि मन्दी के बाद बेकारी में तेजी से गिरावट आयी, और सन् 1923 में यह उस स्तर तक आ गयी जहाँ यह पूर्ण रोजगार के साथ सुसंगत थी। यह भी अनुभव किया गया कि मन्दी के दौरान औद्योगिक उत्पादन भी बहुत घट गया था और यह भी देखा गया कि मई 1920 से जुलाई 1921 तक की अवधि में आटोमोबाइल उत्पादन साठ प्रतिशत तक दुष्प्रभावित हो चुका था तथा कुल मिलाकर सम्पूर्ण औद्योगिक उत्पादन में तीस प्रतिशत की गिरावट आ चुकी थी। किन्तु मन्दी के समाप्त होने पर औद्योगिक उत्पादन शीघ्र ही वापस पटरी पर आ गया। अक्टूबर 1922 में औद्योगिक उत्पादन ने पुनर्यौवन हासिल किया और वापस अपनी ऊँचाइयों पर पहुँच गया।

विभिन्न प्रविधियों और सूचकांकों का प्रयोग करते हुए, विक्टरजार्नोविट्ज़ ने यह निष्कर्ष निकाला है कि 1920-21 की मन्दी के कारण व्यावासायिक गतिविधि पर दूरगामी प्रभाव पड़े। यहाँ तक, कि जार्नोविट्ज़ ने दावा किया है कि यह एक उच्च प्रकार की मन्दी थी जिसका अनुभव सन् 1873 से लेकर महामन्दी के बीच की अवधि में किया गया।

8.4 परिवहन और तकनीकी प्रगतियाँ

आर्थिक विकास हासिल करने में तकनीक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि यह ऐसे आर्थिक अवसर उत्पन्न करती है जिनकी आवश्यकता उपभोक्ताओं को, यात्रा करने के लिए, होती है।विश्व के विभिन्न कोनों तक पर्यटकों को ले जाने के लिए हवाई यात्रा के योगदान को एक ऐसे प्रमाण के रूप में देखा जा सकता है जिसका योगदान पर्यटन उद्योग में हुई तकनीकी प्रगतियों ने किया है। विमानन उद्योग में कम लागत वाले जहाजों (Low Cost Carriers : LCC) का आना पर्यटन उद्योग में तकनीक को सफलतापूर्वक लागू किए जाने का एक और शानदार उदाहरण है। पर्यटन उद्योग को प्रायः तकनीकों के सुधार, उत्पादन और प्रवर्तन के एक उदाहरण के रूप में देखा जाता है। अपनी प्रकृति में जटिल होने और यह जानने के बावजूद कि बाह्य कारकों में उतार-चढ़ाव के चलते पर्यटन उत्पाद और इनसे जुड़े हितधारक लगातार बदलते रहते हैं, पर्यटन में सूचना तकनीक के विकास और प्रवर्तन का प्रभाव उल्लेखनीय रहा है।

सूचना तकनीक में क्रान्ति के चलते विश्व में नज़दीकियाँ बढ़ी हैं क्योंकि अब गन्तव्य के बारे में तुरन्त की (real time) जानकारी भी हासिल की जा सकती है।सूचना तकनीक ने लोगों को अब इतना अधिक सशक्त कर दिया है कि वे अपने घर बैठे-बैठे गन्तव्य-स्थल पर उपलब्ध आकर्षणों, मौसम, होटलों, टैक्सियों आदि के बारे में जानकारी हासिल कर सकते हैं। पर्यटक और गन्तव्य-स्थल को एक-दूसरे के बहुत निकट लाकर इण्टरनेट ने पर्यटन व्यवसाय में तीव्र वृद्धि कर दी है।

यात्रा और पर्यटन उद्योग एक संवेदनशील उद्योग है जिस पर किसी भी बड़ी या छोटी घटना, जैसे – उथल-पुथल, आतंकी हमले, आन्दोलन और हड़तालों आदि का बुरा प्रभाव पड़ सकता है। विमान सेवाएँ पर्यटन उद्योग का सर्वाधिक प्रभावित हिस्सा हैं और ऐसा गन्तव्य-स्थलों पर होने वाले आतंकी हमलों या उपद्रवों के कारण है। उड़ानों के सुचारू संचालन के लिए विमान सेवाओं को बाध्य होना पड़ा कि वे कुछ नई विपणन रणनीतियों को लागू करें। इसके परिणामस्वरूप अब विमान सेवाएँ ई-कॉमर्स पर अधिकाधिक जोर दे रही हैं। अधिकांश विमान सेवाओं ने कुछ नई विपणन रणनीतियों का विकास किया है, जैसे – विशिष्ट आवेदनों को प्रारम्भ करना, जिसमें आज के दौर में अधिक ध्यान प्रबन्धकीय अन्तर्वस्तुओं पर दिया जाता है;वैयक्तीकृत सॉफ़्टवेयर तथा व्यावसायिक सूचनाओँ से जुड़ी सामग्रियों का विकास करना। सुरक्षा और प्रभावशीलता जैसी अपनी विशेषताओं के कारण इण्टरनेट तकनीक ने विमानन क्षेत्र में बहुत लोकप्रियता हासिल की है। यह इण्टरनेट तकनीक विमान सेवाओं के लिए भी लाभकारी सिद्ध हुई है क्योंकि इण्टरनेट के कारण विमान सेवाओं की संचालन-लागत घट गयी है और उन्हें उपभोक्ताओं से निकट सम्बन्ध स्थापित करने के अवसर मिले हैं। सूचना तकनीक के क्षेत्र में क्रान्ति के कारण कुछ महत्वपूर्ण विशेषताओं ने ध्यान आकृष्ट किया है। इनमें से कुछ विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

यात्रा और पर्यटन उद्योग में वाकी-टाकी (Walkie-Talkie), इसके प्रभाव

विमानन क्षेत्र में वाकी-टाकी के आगमन से इस क्षेत्र पर अनेक तरीकों से गहन प्रभाव पड़े हैं। यात्रा कराने वाले मध्यस्थों और उनके व्यवसाय के निष्पादन पर इस प्रभाव को देखा जा सकता है। विभिन्न यात्रा पोर्टलों के विकास ने यात्रा-व्यवसाय को वास्तव में पुनःपरिभाषित कर दिया है। इसके कारण बहुत सारे ऑनलाइन यात्रा पोर्टलों का जन्म हुआ है जो पर्यटन

के लेखे-जोखे को उपभोक्ताओं तक प्रभावशाली रूप से समेकित करके पहुँचाते हैं। लुफ्थांसा और ब्रिटिश एयरवे जैसी विमान सेवाओं ने ई-कॉमर्स आवेदन पहले ही प्रारम्भ कर दिया है जिसके माध्यम से इन्होंने अपने ग्राहकों तक इस सुविधा को विस्तारित कर दिया है कि वे आरक्षण प्रणाली तक अपनी सीधी पहुँच रख सकें। इस प्रकार, अब उपभोक्ता इस स्थिति में हैं कि वे किसी भी गजट (मोबाइल फोन या लैपटॉप) के माध्यम से और किसी भी जगह (घर या कार्यालय या किसी मनोरंजन-स्थल) से उड़ानों के बारे में जान सकते हैं, टिकट बुक कर सकते हैं और अन्तिम रूप से टिकट खरीदने से पहले तमाम उपलब्ध विकल्पों की जाँच भी कर सकते हैं।

अभ्यास 1

अपनी प्रगति को जाँचिए

1) मध्य काल में पर्यटन और आर्थिक चरण पर चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) तकनीक के महत्व को व्याख्यायित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

8.5 राजनीति और पर्यटन

जहाँ तक पर्यटन और राजनीति की बात है, ये दोनों चीज़ें एक-दूसरे से निकटतापूर्वक जुड़ी हुई हैं। राजनीति राज्यों का मार्गनिर्देशन करती है और साथ ही साथ यह समाज में विद्यमान धारणाओं से मार्गनिर्देशित भी होती है। समाज स्वीकार्यता और लोकप्रियता के माध्यम से शासित होता है तथा योग्यता ये बचता है। इसलिए, राजनीति और इसके प्रमुख खिलाड़ियों, जो राजनीतिक प्रक्रिया में शामिल रहते हैं, को ऐसी स्थिति में माना जाता है जिसमें रहकर वे सम्पूर्ण विश्व के पर्यटकों के विचारों को या तो प्रभावित कर सकते हैं या स्पष्टता प्रदान कर सकते हैं।

जो निर्णय पर्यटन उद्योग के संचालन को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित करते हैं, वे निर्णय राजनीतिज्ञों द्वारा ही लिए जाते हैं। वे विचारों का प्रक्षेपण भी करते हैं और गन्तव्य-स्थल के सम्बन्ध में लोगों के मतों को प्रभावित भी करते हैं। धनराशि और सदस्यता को लेकर जनमत-संग्रह कराने के साथ-साथ वे निगम कर के आरोपण की शुरूआत भी करते हैं। निगरानी रखने वाले परिप्रेक्ष्य के माध्यम से यात्रा-उद्योग को कमजोर बनाने के लिए राजनीतिज्ञ ही पूर्णतः जिम्मेदार होते हैं।

इसलिए, आइए इस पर चर्चा करते हैं कि राजनीति और पर्यटन एक-दूसरे से किस प्रकार सम्बन्धित हैं। राजनीतिज्ञों के पास किसी समुदाय की धारणा को किसी गन्तव्य-स्थल की तरफ मोड़ देने की विशिष्ट शक्ति होती है। यह जन-धारणा किसी भी तरीके की हो सकती

है और यह भी हो सकता है कि यह धारणा दुतरफा हो। इसी तरह, यह भी हो सकता है कि यह धारणा बाहर से देखने वाले परिप्रेक्ष्य से युक्त हो या स्थिति इसके विपरीत भी हो सकती है। उदाहरण के लिए, जो राजनीतिक दल चुनाव लड़ने जा रहा है, उसके पास दोनों विकल्प मौजूद हैं। निर्वाचन में या तो वह दल जीत जाएगा या हार जाएगा किन्तु अगर वह जीतता है तो पर्यटन उद्योग का पूरा दृश्य ही प्रभावित हो जाएगा। इससे देश के भीतर और देश से बाहर के पर्यटन की गतिशीलता पर असर पड़ेगा। ये राजनीतिक दल ही हैं जो अपने-अपने देशों में पर्यटन के भविष्य को निर्धारित करते हैं क्योंकि पर्यटन की गतिशीलता और पर्यटन उद्योग के संचालन से जुड़ी सारी योजनाएँ और नीतियाँ इन दलों की तरफ ही केन्द्रीकृत होती हैं। किसी भी देश में पर्यटन से सम्बन्धित सारे विनियामक प्राधिकरण राजनीतिक दल ही हैं, इसलिए एक ऐसे राजनीतिक दल का होना बहुत महत्वपूर्ण है जो देश की सेवा करने की सदिच्छा रखता हो। यह बहस का विषय है कि क्या आतंकवाद एक राजनीतिक नारा या मूलमन्त्र है या फिर यह आतंकवादियों द्वारा अपने एजेण्डे को आगे बढ़ाने के लिए स्वयं प्रक्षेपित किया जाता है। जो भी हो, आतंकवाद घृणा से उत्पन्न होता है और घृणा कभी भी पर्यटन को प्रोत्साहित नहीं कर सकती। पर्यटन तो विभिन्न संस्कृतियों के ऐसे सम्मिलन का साक्षी रहा है, जो विभिन्न जातियों, पन्थों, समुदायों, धर्मों और रंगों को आकर्षित करता है और उन सबके बीच प्रसन्नता का संचार करता है। यदि किसी गन्तव्य-स्थल पर कोई आतंकवादी घटना होती है, तो यह पर्यटन उद्योग के लिए लज्जा का विषय है।

पर्यटन राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तनों के लिए बहुत महत्वपूर्ण रहा है। 1914 के बाद की अवधि पर्यटकों द्वारा किए गए अनेक ऐसे देशों के बहिष्कार की साक्षी रही है, जिनमें राजनीतिक उथल-पुथल थी या अवांछनीय राजनीतिक शासन था। राजनीतिक चर्चाओं में

पर्यटन का व्यापक प्रयोग करना, निष्पक्ष व्यापार और वाणिज्य के लिए दबाव बनाना, तथा आर्थिक रूपान्तरण के लिए पर्यटन को एक उपकरण की तरह प्रयुक्त करने की रणनीति बनाना किसी भी देश द्वारा पर्यटन के विकास के लिए अपनायी गई नीति के प्रति राजनीतिक इच्छा के प्रभाव को दर्शाता है।

8.6 राष्ट्र संघ (लीग ऑफ़ नेशंस)

प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात दो या दो से अधिक देशों के बीच की समस्याओं और विवादों का समाधान करने के लिए एक अन्तरराष्ट्रीय राजनयिक समूह का विचार किया गया, जिसका नाम राष्ट्र संघ (लीग ऑफ़ नेशंस) था। यह संयुक्त राष्ट्र संघ की पूर्वगामी संस्था थी। द्वित्तीय विश्व युद्ध के दौरान इसका संचालन बन्द कर दिया गया।

राष्ट्र संघ का उद्भव अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन (जनवरी, 1918) द्वारा दिए गए चौदह सूत्री भाषण में खोजा जा सकता है। यह भाषण प्रथम विश्व युद्ध में हुए भीषण विनाश और नरसंहार के पश्चात विश्व में शान्ति लाने के प्रति वुडरो विल्सन के विचारों से सम्बन्धित था। विल्सन का विचार देशों के बीच विवादों के समाधान के लिए एक विश्व-स्तरीय संगठन का सृजन करने का था ताकि ये विवाद युद्ध और रक्तपात के रूप में विस्फोटक न हो जाएँ।

सन् 1919 में राष्ट्र संघ की प्रक्रिया और सांगठनिक संरचना को एक प्रसंविदा के रूप में प्रतिष्ठापित किया गया। यह प्रसंविदा पेरिस शान्ति सम्मेलन में भाग लेने वाले देशों द्वारा विकसित की गयी थी। प्रारम्भ में इसका मुख्यालय लन्दन में बनाया गया और बाद में यह स्थानान्तरित होकर जेनेवा चला गया। सन् 1920 में राष्ट्र संघ के सदस्य देशों की संख्या

48 थी। यह पहला ऐसा संगठन था जिसने विश्व शान्ति को प्रोत्साहित किया। राष्ट्र संघ की प्रसंविदा के अनुसार इसके प्राथमिक लक्ष्य इस प्रकार हैं –

क) यह सामूहिक सुरक्षा और विसैन्यीकरण के माध्यम से युद्ध को रोकता है तथा वार्ता और मध्यस्थता के जरिये अन्तरराष्ट्रीय विवादों का समाधान करता है।

ख) श्रम की दशाओं, देशज निवासियों के प्रति व्यवहार, मानव और नशीले पदार्थों की तस्करी पर पूर्ण प्रतिबन्ध, शस्त्र व्यापार पर नियन्त्रण, वैश्विक स्वास्थ्य के प्रति सावधानी, युद्धबन्दियों की चिन्ता और यूरोप में अल्पसंख्यकों की समग्र सुरक्षा के सम्बन्ध में यह सन्धियाँ स्थापित करता है।

राष्ट्र संघ की संलग्नता और विवादों का निवारण

विलना के नगर के लिए पोलैण्ड और रूस (1920)

ऊपरी सिलेशिया के बारे में पोलैण्ड और जर्मनी तथा तेश्चेन नगर पर इन दोनों देशों के साथ चेकोस्लोवाकिया

– आइलैण्ड द्वीप पर फिनलैण्ड और स्वीडन ।

– हंगरी और रोमानिया के विवाद ।

– फिनलैण्ड और रूस के झगड़े ।

– यूगोस्लाविया और आस्ट्रिया के विवाद ।

– अल्बानिया और ग्रीस के सीमा विवाद ।

– मोरक्को को लेकर फ्रांस और इंग्लैण्ड के बीच के तनाव ।

– कोर्फू द्वीप पर बेनितो मुसोलिनी द्वारा की गयी बमबारी के कारण ग्रीस ने मदद माँगी थी। इस विवाद का समाधान राजदूतों के सम्मेलन (राष्ट्र संघ को दरकिनार कर दिया गया था) द्वारा किया गया।

– ग्रीक और बुल्गारिया का तनाव ।

राष्ट्र संघ के अन्य प्रयास

- 1920 का जेनेवा प्रोटोकाल (अब इसे रासायनिक और जैविक हथियार के सन्दर्भ में देखा जाता है)
- 1930 के दशक में सम्पन्न हुआ विश्व निरस्त्रीकरण सम्मेलन (एडोल्फ़ हिटलर के कारण यह सम्मेलन असफल हो गया)
- अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के लिए अधिदेश आयोग। यह आयोग अफ़्रीका और फिलिस्तीन में शामिल रहा।
- गैर-कानूनी युद्ध के लिए केलॉग-ब्रियाँ समझौता (1928)। जब जापान ने मंगोलिया पर आक्रमण कर दिया तो राष्ट्र संघ यहाँ असमर्थ सिद्ध हुआ।
- द्वित्तीय विश्व युद्ध में राष्ट्र संघ असफल रहा।

राष्ट्र संघ की सबसे बड़ी कमी यह रही कि अपने संकल्पों के प्रवर्तन के लिए, अपने आर्थिक अनुमोदनों के लिए या आवश्यकता पड़ने पर सैन्य सहायता के लिए इसके पास अपनी कोई

सैन्य शक्ति नहीं थी और इस मामले में यह प्रथम विश्व युद्ध के मुख्य खिलाड़ियों पर पूर्णतः निर्भर रहा। ऐसा करने में महान शक्तियाँ (ग्रेट पावर्स) अनेक अवसरों पर हिचकिचाती रहीं। उन्हें लगता था कि अनुमोदन कर देने से राष्ट्र संघ के सदस्य देशों को धक्का लग सकता है, इसलिए राष्ट्र संघ इन आवश्यकताओं को पूरा करने में हिचकिचाता रहा और इस प्रकार इसने इन चीजों से एक दूरी बनाए रखी। 1920 के दशक में कुछ उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल करने और कुछ प्रारम्भिक असफलताओं के बाद धुरी शक्तियों द्वारा किए गए आक्रमणों को रोकने में राष्ट्र संघ असमर्थ हो गया। राष्ट्र संघ की छवि इस तथ्य के बावजूद दिन-ब-दिन बिगड़ती चली गयी कि संयुक्त राज्य अमेरिका कभी भी इसका सदस्य नहीं रहा और सोवियत संघ इसका सदस्य बहुत बाद में बना। राष्ट्र संघ से स्वयं को बाहर करने वाला पहला देश जर्मनी बना, और इसके पश्चात जापान, इटली, स्पेन और अन्य देशों ने भी स्वयं को राष्ट्र संघ से अलग कर लिया। द्वित्तीय विश्व युद्ध के प्रारम्भ ने अपने आप ही यह सिद्ध कर दिया कि राष्ट्र संघ अपने उस बुनियादी उद्देश्य को पूर्ण करने में असफल रहा, जिसके लिए इसका गठन किया गया था। यह भविष्य में होने वाले विश्व युद्ध को रोकने में असफल रहा। राष्ट्र संघ की कार्यावधि कुल मिलाकर 26 वर्ष रही और द्वित्तीय विश्व युद्ध के समापन के पश्चात इसके स्थान पर संयुक्त राष्ट्र संघ अस्तित्व में आ गया। संयुक्त राष्ट्र संघ ने ऐसे सभी कर्तव्यों और अधिकारों को अपने भीतर समाहित कर लिया, जो राष्ट्र संघ को प्रदान किए गए थे।

8.7 आईयूओटीओ (IUOTO)

आईयूओटीओ का तात्पर्य है आधिकारिक यात्रा संगठन का अन्तरराष्ट्रीय संघ (International Union of Official Travel Organization)। आईयूओटीओ एक गैर-सरकारी, तकनीकी संगठन था जो बाद में यूएनडब्ल्यूटीओ (संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन –United Nations World Tourism Organization) के रूप में सामने आया। आधिकारिक पर्यटक संगठन की पहली अन्तरराष्ट्रीय कांग्रेस सन् 1925 में हेग में आयोजित की गयी थी। सन् 1930 में कांग्रेस ने एक औपचारिक संघ बनाने का निर्णय लिया और सन् 1934 में यह आधिकारिक पर्यटक प्रचार संगठन के अन्तरराष्ट्रीय संघ (IUOTPO – International Union of Official Tourist Publicity Organization) के रूप में सामने आया। प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात आईयूओटीपीओ का आईयूओटीओ (International Union of Official Travel Organization) के रूप में पुनर्गठन किया गया। यह राष्ट्रीय पर्यटक संगठनों, औद्योगिक और उपभोक्ता समूहों का एक समुच्चय था। आईयूओटीओ ने पर्यटन के प्रोत्साहन को समर्थन प्रदान किया तथा विकासशील देशों के लिए एक आर्थिक साधन के रूप में यात्रा और पर्यटन के विकास में इसने सहायता की।

8.8 बरमूडा समझौता

बरमूडा समझौता, अपने-अपने भूभागों के बीच नागरिक हवाई यात्रा (विमान सेवा) के संचालन के लिए, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच का एक औपचारिक समझौता था। इस समझौते पर हस्ताक्षर सन् 1946 में "बरमूडा" नामक स्थान पर किया गया था, इसीलिए इसे "बरमूडा समझौते" के नाम से जाना जाता है। बरमूडा समझौते पर हस्ताक्षर किए जाने से पहले; सन् 1944 में शिकागो सम्मेलन आयोजित किया गया था जहाँ "हवाई क्षेत्र की स्वतन्त्रताओं" पर चर्चा की गयी थी। इस सम्मेलन में संयुक्त राज्य

अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम और अन्य देश हवाई क्षेत्र की प्रारम्भिक दो स्वतन्त्रताओं पर सहमत हुए थे। ये दो स्वतन्त्रताएँ थीं – किसी देश के ऊपर से विमान ले जाने की स्वतन्त्रता तथा ईंधन भरने या मरम्मत करने के लिए विमान को किसी देश में उतार सकने की स्वतन्त्रता। किन्तु अन्तरराष्ट्रीय वायु परिवहन के आर्थिक नियन्त्रण के मुद्दे पर ये देश असहमत थे। अनेक देशों ने कार्गो ट्रैफिक और यात्रियों से जुड़ी तीसरी, चौथी और पाँचवीं स्वतन्त्रताओं का संज्ञान लेने से भी इनकार कर दिया। बाद में सन् 1945 में संयुक्त राज्य अमेरिका और यूनाइटेड किंगडम की सरकारें "बरमूडा" में एकत्रित होने के लिए सहमत हुईं और हवाई यातायात की शर्तों पर चर्चा की गयी।

बरमूडा समझौते ने एक-दूसरे के (अमेरिका और यूनाइटेड किंगडम) वाहक-विमानों की उड़ान के लिए असंदिग्ध हवाई यात्रा मार्गों को परिभाषित किया। इस समझौते में दोनों देशों के वाहक-विमानों को किसी भी वायुमार्ग पर (सम्बन्धित भूभागों पर) यात्रा करने के लिए निष्पक्ष और समान सम्भावनाएँ प्रदान की गयीं। इस समझौते में यह निर्णय भी लिया गया कि दोनों देश एक-दूसरे के हितों का ध्यान रखेंगे। समझौते में यह भी प्रस्थापित किया गया कि हवाई किराये सम्बन्धित विनियामक प्राधिकरणों द्वारा संस्तुत होंगे या अन्तरराष्ट्रीय वायु परिवहन संघ (IATA – International Air Transport Association) द्वारा निर्धारित किए जाएँगे। सन् 1978 में द्वित्तीय बरमूडा समझौते को प्रभावशील बनाया गया और पूर्ववर्ती समझौते को समाप्त कर दिया गया। बरमूडा समझौता एक प्रारम्भिक वायु परिवहन समझौता (द्विपक्षीय) है और यह अनेक आगामी समझौतों के लिए एक आदर्श बना।

अभ्यास 2

अपनी प्रगति को जाँचिए

1) विश्व शान्ति में राष्ट्र संघ की भूमिका पर चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) बरमूडा समझौता क्या है?

.....

.....

.....

.....

8.9 सारांश

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात अन्तरराष्ट्रीय पर्यटन में तेजी से प्रगति हुई है। वर्तमान समय में पर्यटन रोजगार के प्रमुख क्षेत्रकों में से एक है और यह अधिकांश लोगों के लिए, खासकर विकासशील देशों में, उनके दैनिक जीवन का एक अंग बन चुका है। द्वित्तीय विश्व युद्ध के बाद, विशेषकर परिवहन क्षेत्रक में तकनीकी विकास के कारण तथा सम्पदा, गतिशीलता, फुरसत के समय, नवाचारों, जीवन शैली के प्रतिमानों में परिवर्तनों, फैशन, विपणन,

जागरुकता और नए पर्यटक उत्पादों के विकास को समाहित करने वाले अन्तरराष्ट्रीय समझौतों के कारण यात्रा और पर्यटन की गतिविधियों और इससे सम्बन्धित उद्योग में उत्कर्ष की स्थिति आयी है। इस इकाई में दोनों विश्व युद्धों के बीच यानी सन् 1914 से 1950 के बीच पर्यटन के उत्कर्ष से जुड़े कुछ पहलुओं पर चर्चा की गयी। यहाँ हमने इस अवधि के पर्यटन और अर्थव्यवस्था, परिवहन और तकनीकी प्रगतियों, पर्यटन की राजनीति, राष्ट्र संघ और कुछ अन्य अन्तरराष्ट्रीय संगठनों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डालने की कोशिश की है।

8.10 शब्दावली

आईयूओटीपीओ :इसका विस्तृत रूप है आधिकारिक पर्यटक प्रचार संगठन का अन्तरराष्ट्रीय संघ (IUOTPO – International Union of Official Tourist Publicity Organization)।

आईयूओटीओ : इसका विस्तृत रूप है आधिकारिक यात्रा संगठन का अन्तरराष्ट्रीय संघ (International Union of Official Travel Organization)।

बरमूडा समझौता : बरमूडा समझौता सन् 1944 के शिकागो सम्मेलन के फलस्वरूप उत्पन्न हुआ, जिसके अन्तर्गत संयुक्त राज्य अमेरिका और यूनाइटेड किंगडम अन्तरराष्ट्रीय वायु परिवहन के आर्थिक नियन्त्रण को लेकर असहमत हो गए।

8.11 अपनी प्रगति को जाँचिए/ अभ्यास के लिए संकेत

अपनी प्रगति को जाँचिए अभ्यास – 1

1) कृपया अनुभाग 8.3 देखें।

2) कृपया अनुभाग 8.4 देखें।

अपनी प्रगति को जाँचिए अभ्यास –2

1) कृपया अनुभाग 8.6 देखें।

2) कृपया अनुभाग 8.8 देखें।

****